बी.एड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० शउफ्ता सिददीकी

व्याख्याता , हितकारी सहकारी महिला शिक्षा महाविद्यालय , आरामपुरा , कोटा - राजस्थान

सार - मनुष्य को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए अपने वातावरण तथा परिस्थितियों के साथ समायोजन करना पड़ता है। वर्तमान समय में समायोजन करना समस्यात्मक विषय बनता जा रहा है ।बी.एड महाविद्यालय में विभिन्न पृष्ठभूमियो से छात्राएं आती है जिनमें कुछ विवाहित होती हैं और कुछ अविवाहित। शोधकत्री का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ कि क्या विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन करने में अंतर होता है या नहीं। यही जाने के उद्देश्य से शोधकत्री ने 'बीएड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन ।"का चयन किया। बीएड महाविद्यालय में अध्ययनरत कोटा नगर की क्रमशः 75 विवाहित एवं 75 अविवाहित छात्राओं का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन करके सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। समायोजन मापन हेतु प्रश्नावली एवं सांख्यिकी विधियों- मध्यमान, मानक विचलन और टी परीक्षण का प्रयोग किया। निष्कर्ष रूप में यह पाया गया कि बी. एड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के समायोजन की प्रक्रिया में कोई अंतर नहीं होता है ।दोनों ही प्रकार की छात्राएं अपने संवेगात्मक शैक्षिक और सामाजिक क्षेत्रों में भली भांति समायोजित हो जाती है अतः महाविद्यालय ,परिवार एवं समाज का दायित्व है कि वे विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं को आगे बढ़ने और उन्हें सक्षम बनाने में सहायता करें ।

प्रमुख शब्द - बी.एड. महाविद्यालय , विवाहित छात्राएं , अविवाहित छात्राएं , समायोजन।

प्रस्तावना

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी होता है तथा समाज में स्वयं को सुव्यवस्थित करने के लिए निरंतर अपनी आवश्यकताओं के मध्य संतुलन बनाए रखता है इस प्रकार समायोजन परिस्थितियों को स्वयं के अनुकूल बनाने की प्रक्रिया है मनुष्य को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए अपने वातावरण तथा परिस्थितियों के साथ समायोजन करना पड़ता है समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मानसिक व व्यावहारिक दोनों प्रकार की क्रियाएं निहित होती है| जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्ति को समायोजन करना पड़ता है सामाजिक समायोजन, संवेगात्मक समायोजन, शैक्षिक समायोजन आदि समायोजन के क्षेत्र है |

सामाजिक समायोजन- जिस व्यक्ति में स्वस्थ उचित रुचियों एवं अभिरुचियाँ पाई जाती है वह आत्मविश्वास से और आशावादी होता है उसके जीवन में कार्य, आराम और मनोरंजन इन तीनों में पर्याप्त संतुलन पाया जाता है। वह सामाजिक दृष्टि से समायोजित व्यक्ति के लाता है।

संवेगात्मक समायोजन- जिस व्यक्ति मे अपने आप को परिस्थितियों के अनुसार बदलने की क्षमता हो अपने संवेगों को उचित प्रकार से अभिव्यक्त कर सकता हो तथा उन पर आवश्यक नियंत्रण रख सकता हो वह संवेगात्मक रूप से समायोजित व्यक्ति कहलाता है।

शैक्षिक समायोजन- जिस व्यक्ति को अपनी योग्यताओं क्षमताओं और कमजोरियों का ज्ञान होता है तथा परिस्थिति के अनुसार अपने को समायोजित कर लेता है जब इस तरह का समायोजन शिक्षा के क्षेत्र में होता है तो उसे शैक्षिक समायोजन कहते हैं।

समस्या का औचित्य

वर्तमान में व्यस्त एवं जटिल जीवन में समायोजन करना समस्यात्मक विषय बनता जा रहा है। जीवन में व्यक्ति को ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है जब वे अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं कर पाता है और कुसमायोजित हो जाता है। शोधकत्री का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ कि बीएड महाविद्यालयों में अध्ययनरत विवाहित और अविवाहित छात्राएं समायोजन के क्षेत्र में अपने को कितना समायोजित कर पाती है। विवाहित और अविवाहित छात्राओं मे समायोजन करने में अंतर होता है या नहीं। इसी तथ्य को जानने हेतु शोधकत्रीद्वारा इस समस्या का चयन किया गया है|

समस्या कथन

"बी.एड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन"।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1) बी.एडमहाविद्यालयों में अध्ययनरत विवाहित छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
2) बी.एडमहाविद्यालयों में अध्ययनरत अविवाहित छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
3) बी.एड महाविद्यालयों में अध्ययनरत विवाहित तथा अविवाहित छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1) बी.एड महाविद्यालयों में अध्ययनरत विवाहित छात्राओं तथा अविवाहित छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन के बीच सार्थक अंतर नहीं है।
2) बी.एड महाविद्यालयों में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।
3) बी.एड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के शैक्षिक समायोजन के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।
4) बी.एड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के समायोजन के क्षेत्रों (संवेगात्मक,सामाजिक व शैक्षिक) के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।

शोध परिसीमन

1) प्रस्तुत शोध कोटा नगर के बी.एड महाविद्यालय तक ही सीमित है।

2) प्रस्तुत शोध में उन विवाहित एव आविवाहित छात्राओं को लिया गया है जो वर्तमान में बी.एड महाविद्यालय में अध्ययनरत हैं।

3) समायोजन के केवल 3 क्षेत्र संवेगात्मक, सामाजिक व शैक्षिक समायोजन को शामिल किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में शोधकत्री ने अध्ययन के लिए यादृच्छिक विधि का प्रयोग करते हुए कोटा नगर के बी.एड महाविद्यालयों में अध्ययनरत विवाहित तथा अविवाहित छात्राओं क्रमशः 75 एवं 75 का चयन किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकत्री ने अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

सांख्यिकी विधियां

मध्यमान, मानक विचलन, टी परीक्षण।

शोध विधि में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में समायोजन को मापने हेतु प्रोफेसर ए·के·पी· सिन्हा व आर·पी· सिन्हा द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. बीएड महाविद्यालयों में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन के मध्यमान मे सार्थकता का अंतर ।

सारणी संख्या 1

क्षेत्र	न्यादर्श	मध्यमान	मानकविचलन	टी मुल्य	सार्थक स्तर
विवाहित छात्राएं	75	2·72	0·53	0.86	स्वीकृत
आविवाहित छात्राएं	75	2·79	0·61		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि विवाहित एवं आविवाहित छात्राओं के मध्यमान क्रमशः2.72 व 2.79 है तथा मानक विचलन क्रमशः 0.53 व 0.61 है इसी प्रकार टी मूल्य 0.86 है जो .05 विश्वास स्तर 1.96 पर सार्थक अंतर नहीं है इसलिए शून्य परिकल्पना कि बी.एड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है, को स्वीकृत किया जाता है। निष्कर्षतः बी.एड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं में संवेगात्मक समायोजन करने में कोई अंतर नहीं होता है ।

2) बीएड महाविद्यालयों में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के सामाजिक समायोजन के मध्यमान मे सार्थकता का अंतर ।

सारणी संख्या 2

क्षेत्र	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
विवाहित छत्राएं	75	13.82	4.04	1.13	स्वीकृत
आविवाहित छात्राएं	75	14.67	5.11		

उपरोक्त सारणी संख्या 2 से ज्ञात होता है कि विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं में मध्यमान क्रमशः 13.82व 14. 67 है तथा मानक विचलन क्रमशः 4.04 व 5.11 है इससे प्राप्त टी मान 1.13 जो कि स्वतंत्रता अंश (df) 148 पर सारणीयन मान 0.05 स्तर पर 1.98 सेकम है इसलिए शून्य परिकल्पना कि बी.एड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है, को स्वीकार किया जाता है। निष्कर्षतः बी.एड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहितछात्राओं में सामाजिक समायोजन करने में कोई अंतर नहीं होता है ।

3) बी.एड महाविद्यालयों में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के शैक्षिक समायोजन के मध्यमान में सार्थकता का अंतर

सारणी संख्या 3

क्षेत्र	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
विवाहित छात्राएं	75	10·44	4·76	1·24	स्वीकृत
आविवाहित छात्राएं	75	11·92	5·87		

उपरोक्त सारणी संख्या 3 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के शैक्षिक समायोजन के मध्यमान क्रमशः 10.44 व 11.92 है मानक विचलन क्रमशः 4.76 व 5.87 है। इससे प्राप्त मूल्य 1.24 है जो स्वतंत्रता अंश (df)148 पर सारणीयन मान 0.05 स्तर पर 1.98 से कम है इसलिए शून्य परिकल्पना किबी.एड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है, को स्वीकार किया जाता है। निष्कर्षतः बी.एड महाविद्यालयों में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं में शैक्षिक समायोजन के प्रति कोई अंतर नहीं पाया गया है|

4) बी.एड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहितछात्राओं के समायोजन के क्षेत्रों (संवेगात्मक, सामाजिक व शैक्षिक) के मध्य सार्थकता अंतर

सारणी संख्या 4

क्षेत्र	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
विवाहित छात्राएं	75	24·47	6·89	1·75	स्वीकृत
आविवाहित छात्राएं	75	26·53	7·62		

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के समायोजन के क्षेत्रों के मध्यमान क्रमशः 24.47 व 26.53है तथा मानक विचलन क्रमशः 6.89 व 7.62 है इनसे प्राप्त टीमूल्य 1.75 है जो स्वतंत्रता अंश (df)148 पर सारणीयन मान 0·05 स्तर पर 1.98 से कम है इसलिए शून्य परिकल्पना कि बी.एड महाविद्यालयों में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के समायोजन के क्षेत्रों (संवेगात्मक, सामाजिक व शैक्षिक) में सार्थक अंतर नहीं है, को स्वीकार किया जाता है। निष्कर्षता बी.एड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवंअविवाहित छात्राओं के समायोजन के क्षेत्रों के प्रति सार्थक अंतर नहीं पाया गया है ।

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष

1) बी.एड महाविद्यालयों में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं द्वारा संवेगात्मक समायोजन के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं है अतः विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन करने में कोई अंतर नहीं होता है। विवाहित एवं अविवाहित छात्राएं अपने संवेगों को अभिव्यक्त एवं नियंत्रित कर सकती है।
2) बी.एड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं द्वारा सामाजिक समायोजन के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं है। विवाहित एवं अविवाहित दोनों ही छात्राएं सामाजिक समायोजन करने में दक्ष होती है तथा वे आशावादी एवं आत्मविश्वासी होती है ।
3) बी.एड महाविद्यालय में अध्ययनरत विवाहित एवं अविवाहित छात्राओं द्वारा शैक्षिक समायोजन के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं है । विवाहित एवं अविवाहित छात्राएशैक्षिक समायोजन में दक्ष होती है महाविद्यालय के वातावरण, अध्ययन, शैक्षिक उपलब्धि के समायोजन करने में कोई अंतर नहीं होता है।
4) बी.एड महाविद्यालयों में अध्ययनरत विवाहित एवं आदिवासी छात्राओं द्वारा शैक्षिक समायोजन के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं है अतः विवाहित एवं अविवाहित छात्राएं संवेगात्मक,सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन करने में दक्ष होती हैं। किसी भी विषम परिस्थिति का सामना मजबूती से करती हैं उनके विवाहित होने या अविवाहितहोने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।

शैक्षिक निहितार्थ

1) प्रस्तुत शोध के आधार पर कहा जा सकता कि महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में निरंतर सफलता की ओर अग्रसर है। वह विपरीत परिस्थितियों में भी समायोजन करके आगे बढ़ रही हैं। उनके मार्ग में विवाहित एवंअविवाहित होना कोई प्रभाव नहीं डालता है । यह पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ सफलतापूर्वक समायोजन कर रही है। अतः महाविद्यालय,परिवार एवं समाज का दायित्व है कि विवाहित एवं अविवाहितछात्राओं को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहे ।

2) प्रस्तुत शोध कार्य विवाहित एवं अविवाहितछात्राओं के समायोजन करने की स्थिति को समझने में सहायक होगा। इससे यह पता चलता है की महिलाओं में समायोजन करने की प्रवृत्ति पुरुषों की अपेक्षा अधिक होती है।

3) भावी शोध हेतु शोधार्थियों को उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सूचनाएं उपलब्ध होंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) प्रोफेसर गुप्ता, एम. एल. (2006)- भारतीय नारी कीवर्तमानस्थिति।

2) भटनागर सुरेश (2008)-शिक्षामनोविज्ञान तथा शिक्षणशास्त्र।

3) बेस्ट,जॉन. डब्ल्यू- रिसर्च इन एजुकेशन।

4) माथुर, डॉ. एस. एस. (2009) - शिक्षमनोविज्ञान।

5) शर्मा, डॉक्टर आर्य, (2011)- शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध।

6) Bedekar, V.H- How to write assignments, research papers, diss. and thesis.